बघेलखण्ड के ऐतिहासिक, धार्मिक और पयर्टन स्थल

डॉ. संतोष कुमार दुबे
शासकीय महाविद्यालय बारगाव जिल्हा सिंगरौली मध्य प्रदेश

बघेलखण्ड के ऐतिहासिक, धार्मिक और पयर्टन स्थलों में अमरकंटक, बान्धवगढ़, भरहुत, देऊरदृ कोठार, कालिंजर, आदि महत्वपूर्ण हैं। बघेल खण्ड अत्यंत प्राचीन है अपने धार्मिक व राजनैतिक महत्व के अतरिक्त धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रस्तावना :

वर्तमान समय मे लोगो की जीवन शैली भौतिकता वादी है समाज एक मशीन की तरह बन गया है लोगो को सोचने और समझने कि फुरसत नही है। लोग अंधी दौड मे भाग रहे है। लेकिन सबको इतिहास के ज्ञान का सहारा लेना चाहीए वैसे देखा जाये तो बघेल खण्ड मे बहुत से धार्मिक एवं एतिहासिक स्थल है । जो निम्न प्रकार है

1. अमरकंटक :

अमरकंटक नर्मदा का उद्गम स्थल है। इस स्थान को सोमपर्वत भी कहा जाता है। वायुपुराण में उल्लेखित है कि, एक बार ताण्डव करते हुये शिव के शरीर से पसीना बह निकला। वही आकर एक कुण्ड में इकट्ठा हो गया, जिससे एक बालिका प्रकट हुई, वह नर्मदा थीं। शंकर जी ने उन्हें लोक कल्याण के लिये नदी बनकर बहने को कहा। नर्मदा मेकल पर्वत से निकलने के कारण ष्मेकलसुताष कहलाती है। नर्मदा को संस्कृत ग्रन्थों में रेवा कहा गया है। रीवा का नामकरण भी इसी आधार पर हुआ है। कुण्ड के आस–पास 20 मन्दिर है । कुण्ड के पश्चिम में गोमुख से पानी बहकर जहाँ जमा होता है, उसे कोटि तीर्थ कहते थे। अमरकंटक का पूरा क्षेत्र सिद्ध स्थल है। स्कन्ध पुराण (5/28/112) में कहा गया है कि, मन से भी अमरकंटक क्षेत्र का स्मरण करने वाले व्यक्ति को चन्द्रायण व्रत का पुण्य प्राप्त होता है। मत्स्य पुराण (190/24) में लिखा है कि, यहाँ देवों का निवास है, इसीलिये इसे अमरकंटक कहा गया है।यहाँ पिण्डदान का भी महत्व है। अमरकंटक से ही भारत की प्रसिद्ध सलिला सोन का भी उद्गम हुआ है। सोन नदी के उद्गम स्थल को सोनमूड़ा के नाम से जाना जाता है। सोनमुड़ा में ही आँख के लिये अत्यन्त लाभदायक जड़ी–बूटियों जैसे गुलबकावली वनस्पतियाँ आज भी विद्यमान है। यहाँ जालेश्वर महादेव का अत्यन्त प्राचीन मन्दिर है। अमरकंटक में माई की बगिया, कपिल धारा, दूध धारा, कबीर चौरा, मार्कण्डेय आश्रम, महर्षि भृगु की साधना स्थली (भृगु कमण्डल) आदि प्रमुख दर्शनीय, धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व के स्थान है। सन्त कबीर ने इस पुण्य क्षेत्र पर तपस्या की थी। आज भी उनके नाम से कबीर चबूतरा नामक स्थान प्रसिद्ध है। मत्स्य पुराण (185/25) में कहा गया है कि अमरकंटक के चारो ओर सभी देवता एवं तीर्थ निवास करते. हैं, यहां नवनिर्मित जैन मन्दिर देखने योग्य है। इस मन्दिर में 24000 किलो वजनी अष्टधातु की भगवान आदिनाथ की प्रतिमा 8000 किलो वजनी कमल पर स्थापित की गई हैं।

2. बान्धवगढ़ :

बान्धवगढ़ नेशनल पार्क इस क्षेत्र को प्रकृति का अनुपम वरदान है, जो बरबस ही पयर्टकों का ध्यान मोहित कर लेता है। रीवा से 135 कि.मी. की दूरी पर है। रेल मार्ग से यहां कटनी या उमरिया

रेल्वे स्टेशन से पहुँचा जा सकता है। रीवा से बान्धवगढ़ के लिये सीधी बस सेवा तथा टैक्सी सेवा उपलब्ध है। बान्धवगढ़ राष्ट्रीय अभ्यारण्य का वर्तमान क्षेत्र लगभग 105.4 कि.मी. है। इस अभ्यारण्य में बाघों की संख्या प्रति किलोमीटर की दर से सर्वाधिक है। यहां 250 से अधिक प्रजातियों की चिड़ियाँ तथा 72 प्रकार की तितलियाँ देखी जा सकती हैं। सम्पूर्ण अभ्यारण्य घने जंगलों से आच्छादित है। अभ्यारण्य में वायरलेस स्टेशन तथा अग्निशामक पथ निर्मित किये गये हैं। सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाये रखने के लिये अनेक चौकियों का निर्माण भी किया गया है। अभ्यारण्य में चार छोटी–छोटी नदियाँ तथा अमरकंटक से निकलने वाली प्रसिद्ध जुहिला नदी भी है। अभ्यारण्य में 24 तालाब भी हैं, जो प्राकृतिक वातावरण में और निखार लाते हैं। बान्धवगढ़ में एक प्रागैतिहासिक काल का दुर्ग है। कहा जाता है कि इसको लक्ष्मण जी ने बनवाया था। यह दुर्ग बान्धौ नामक एक पहाड़ी के शिखर पर, जो समुद्रतल से 2662 फीट ऊँचा है, स्थित है। यहां दो पहाड़ बान्धौ और बमनिया हैं, दोनों एक दूसरे के बहुत समीप हैं। बमनियां पर भी किसी प्राचीन किले की दीवालें हैं। बांधवगढ़ किले का यह भी एक अंश समझा जाता है। इसके अन्दर एक गांव बसा है, जिसके रहने वालों को ष्खोरिया बकसरियाष कहते हैं। इस दुर्ग के नीचे श्गुलवकावलीश का एक वन है। एक बड़ी पत्थर की शेषशायी भगवान की मूर्ति है, जिसमें एक झरने द्वारा लगातार जल गिरता रहता है। दुर्ग के भीतर एक प्राचीन किला, भगवान का मंदिर और कबीर दास जी की गुफा है। कबीर दास जी यहां बहुत दिनों तक रहे बान्धवगढ़ के दुर्ग में बघेलों द्वारा निर्मित कराया गया मोतीमहल व राजकोषालय के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। प्रचलित धारणाओं और स्थलों के अनुसार यह स्पष्ट है कि इस दुर्ग में बघेल नरेश वीरभानु के समय सन्त कबीर दास यहां रहे हैं। इसी तरह यह कहा जाता है कि बघेल नरेश रामचन्द्र ने इस दुर्ग में मुगल बादशाह हुमायुं की पत्नी को उसका पीछा कर रहा था, शरण दी थी। इस दुर्ग की एक गुफा में सबसे प्राचीन प्रमाण ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ एक शिलालेख है। इस गुफा के दोनों ओर शैलचित्र उत्कीर्ण हैं, जिनमें बाघ, दरियाई घोड़े आदि अंकित हैं। गुफा के भीतर बाघ द्वारा एक दरियाई घोड़े के शिकार का शैल चित्र है। उल्लेखनीय है कि संगीत सम्राट तानसेन को सन् 1563 में यहां के बघेल नरेश रामचन्द्र ने मुगल सम्राट अकबर के आमंत्रण पर भेजा था। पर्यटन की दृष्टि से यह एक छोटा किन्तु सघन राष्ट्रीय उद्यान है।

3. भरहुत :

टमस घाटी में स्थित भरहुत सतना से लगभग 14 किलोमीटर दक्षिण सतना–अमरपाटन मार्ग पर स्थित है। रीवा से यह सड़क मार्ग पर 66 कि.मी. की दूरी पर है। भरहुत को गोरगी से भी प्राचीन शिल्पकालीन केन्द्र माना जाता है। भरहुत गाँव के स्तूप के अवशेष सर्वप्रथम भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक एलेक्जेण्डर कंनिघम द्वारा सन् 1873 में खुदवाने पर पाये गये थे। कंनिघम ने 1874 में स्तूप के पूर्वी द्वार के अवशेषो को भारतीय संग्रहालय कलकत्ता और शेष शिल्प अवशेषो को बघेलखण्ड पोलिटकल एजेन्सी सतना को भेजा था। इन अवशेषों से यह प्रमाणित होता है कि मौर्य–शुंग काल में भरहुत एक महानगर था । यहीं से उत्तर से दक्षिण जाने वाला महापथ (राजमार्ग) गुजरता था। यहाँ के मूल स्तूप का निर्माण मौर्यकाल में और पुर्न निर्माण शुंग काल में हुआ था। भरहुत स्तूप की वेदिका के 80 स्तम्भ थे, जिनमें कंनिघम द्वारा की गई खुदाई में 48 स्तम्भ तथा 40 उष्णीय में से 16 उष्णीय ही प्राप्त हुये थे। शेष अवशेष आज भी उस भू–भाग में बिखरे पड़े है। डॉ. वेणीमाधव के मतानुसार स्तूप का निर्माण तीन चरणों में पूरा हुआ होगा। कंनिघम ने तोरण की निर्माण तिथि 150 ई. पूर्व निश्चित की है। भरहुत कला विशुद्ध भारतीय है। इनमें बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाओं को केवल सांकेतिक चिन्हों मात्र से ही प्रदर्शित किया गया है। लोक–जीवन का चित्रण यहाँ की कला की महत्वपूर्ण विशेषता है,

4. देउर कोठार :

देउर कोठार अभी हाल ही में खोजा गया प्राचीन बौद्धकालीन स्थल है, जो रीवा–इलाहाबाद

राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 27 पर स्थित कटरा कस्बे से उत्तर–पश्चिम 5 कि.मी. दूरी पर स्थित है। रीवा से इस स्थान की दूरी 65 कि.मी. है। प्राचीन भारत में 16 महाजनपद थे, जिनमें प्रमुख जनपद उज्जैन से श्रावस्ती तक जाने का जो मार्ग था वह विन्ध्य पर्वत श्रृंखला मध्य से रीवा की त्यौंथर तहसील के देउर, देउपा देवरा एवं देवरी ग्राम से होता हुआ कौशाम्बी जाता था। देउपा एवं देउर ग्राम के बीच मड़फा नामक पहाड़ पर एक प्राचीन पाषाण मठ बना हुआ है। इस मठ के समीप ही प्राचीन बौद्धकालीन अवशेष विद्यमान है। इस स्थल की खोज सर्वप्रथम डॉ. पी. के. मिश्रा सुपरिन्टेण्डिंग आर्कियालॉजिस्ट, भारत सरकार के द्वारा 1982. में श्री अजीत सिंह के साथ की गई है। 1988 में भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित कर आर्कियालॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की देखरेख में रखा है। यह स्थल विन्ध्य पर्वत श्रेणी में स्थित है। सम्राट अशोक ने देश में चार हजार स्तूपों का निर्माण कराया था। अभी तक रीवा जिले में 37 बौद्धकालीन स्तूप मिले हैं। इन्हीं में देउर कोठार के स्तूप भी हैं। साँची के स्तूप की खोज के 182 वर्ष बाद यह स्तूप मिले हैं, जिनमें एक 53 फिट ऊँचा है। अभी तक इस क्षेत्र में स्तूपों के अलावा बौद्ध विहार, आकर्षक शैलाश्रय, ब्राम्ही लिपि से उत्कण स्तंभ व शिलालेख, ड्रेनेज सिस्टम, जल ग्रहण क्षेत्र, हर्मिका यष्टि, छत्रावली, भू–वेदिका, सड़क मार्ग, ताँबे के सिक्के, बर्तन, रेलिंग आदि के महापाषाण ईशा पूर्व तीसरी एवं दूसरी शताब्दी के अवशेष प्राप्त हुये हैं।

5. कालिंजर :

कालिंजर का अस्पष्ट उल्लेख ऋग्वेद में वर्णन किये गये तपस्थलों में किया गया है। महाभारत के वनपर्व में इसे मेधाविक तीर्थ का लोकविश्रुत पर्वत बताया गया है। पुराणों में कालिंजर का पर्याप्त संदर्भ मिलता है। मत्स्यपुराण में कालिंजर को देश तथा वन बताते हुये वहां काली का निवास बतलाया गया है। कालिंजर में श्राद्धदान की महिमा का उल्लेख पुराण में मिलता है। कालिंजर में नीलकंठ मन्दिर के स्थित होने का उल्लेख वामनपुराण में वायु मिलता है। स्कन्दपुराण में कालिंजर को पुरूषोत्तम क्षेत्र कहा गया है। मत्स्यपुराण से मालूम होता है कि यहाँ पर कौशिक के 7 पुत्रों ने हिरण–रूप में जन्म लेकर योग–साधना की थी। भागवत पुराण के अनुसार भरत यहाँ पर हिरण–योनि में उत्पन्न हुये थे। कालिंजर के मृगधारा में हिरण आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। अभिलेखों में भी कालिंजर के उल्लेख मिलते हैं। प्रतिहार

- भोजवर्मा के बराह ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि कालिंजर मण्डल उसके साम्राज्य में स्थित था।
- निजामुद्दीन ने कालिंजर की अजेयता का उल्लेख किया है। यह अजेय दुर्ग रेवा–पठार के ष्तलहार में स्थित है। विन्ध्य क्षेत्र में कालिंजर की भौगोलिक स्थिति अपना महत्व रखती है। यमुना की दक्षिणी घाटी एवं विन्ध्यन तलहार में यह दुर्ग चौकस प्रहरी की तरह खड़ा है। यह दुर्ग समुद्र तल से 370 मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। यह पहाड़ी पास के पहाड़ से अलग है और दोनों के बीच में 360 मीटर चौड़ी एक गहरी खाई है। पहाड़ी दीवार की भांति मैदान में खड़ी है और ऊपर जाकर लगभग 45 या 50 मीटर तक बिल्कुल सीधी दीवार सी बनी हुई है और कुछ स्थलों पर तो यह दुर्गम है। हिन्दू मध्यकाल में इस दुर्ग की सुरक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ किया गया था। कभी इस दुर्ग पर कलचुरियों ने आधिपत्य स्थापित किया तो कभी चन्देलों ने। इस दुर्ग को लेने पर इन राजवंशों ने अपने को कालंजराधीश्वर घोषित किया अबुल फजल ने अकबरनामा में लिखा है कि, अथक प्रयत्न करने पर भी महमूद गजनबी इस दुर्ग को चन्देलों से नहीं ले सका था।

6. माडा :

सिंगरौली जिले में माडा गुफाएं एक ऐतिहासिक स्थल है. ये रॉक कट गुफाओं का समूह है. माडा गुफाएं, सिंगरौली जिले की माडा तहसील में स्थित हैं.

ये गुफाएं 7–8वीं शताब्दी ईसा पूर्व में बनी थीं.

इन गुफाओं में से कुछ प्रसिद्ध गुफाएं हैं विवाह माडा, गणेश माडा, शंकर माडा, जलनालिया, और रावण माडा

इस गुफा परिसर में दो गुफाएं हैं, जिनमें से एक मंदिर गुफा है और दूसरी भूमिगत गुफा है.

भूमिगत गुफा में पानी का एक अज्ञात स्रोत है.

इस गुफा से करीब 200 मीटर की दूरी पर, एक छोटे से मंदिर देवी सीता को समर्पित है जिसे सीता कुटी नाम से जाना जाता है.

यहां एक छोटा झरना भी है, जिसे इच्छा–पूरा जलप्रपात के नाम से जाना जाता है.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- चौहान डां. संतोष सिंह (सोनांचल)
- चतुर्वेदी डॉ. लक्ष्मेंन्द्र कुमार
- एस. डां. अखिलेश (बघेल खण्ड का इतिहास)
- सिंगरौली गजेटीयर